Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2025

स्वामी श्रद्धानन्द का आर्य समाज और शिक्षा में योगदान

संदीप नरवाल [1]

[1] **पीएचडी शोधार्थी, इग्नू विश्वविद्यालय.**

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th February 2025	28th February 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.15823647	https://zenodo.org/records/15823647

प्रस्तावना

सन् 1901 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अंग्रेजों द्वारा लागू की जाने वाली विलायती शिक्षा पद्धति का विरोध करते हुए वैदिक सनातन धर्म से जुड़ी प्राचीन भाषा संस्कृत को भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण हेतु अति महत्वपूर्ण बतलाकर हरिद्वार में गुरुकुल कागड़ी विश्व की स्थापना की। संन 1919-1922 तक स्वामी जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेकर अछूतों व दलितों के हक की आवाज उठाई तथा आदिवासी जनजातियों और अन्य शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व किया। एक बार की बात है कि जब आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य समाजी मंडली के साथ राय बरेली (यूपी) आए। वहाँ उनका सत्संग प्रवचन था। पिता नानक चन्द और युवा मुंशीराम जी की भेंट स्वामी दयानन्द जी से हुई। जहाँ वैदिक धर्म के तर्को एंव हिन्दुत्व सत्ता के खंडन मंडन से प्रभावित होकर मुंशी राम आस्तिक बन गए।[1] फिर 1917 में मुंशी राम संन्यास धारण कर स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए। दयानन्द सरस्वती को अपना गुरु मानकर उत्तरी भारत में बढ़ते हुए इस्लामवाद और इसाइयत की विचारधारा को रोका। हिन्दु धर्म r फैलने वाली कुरीतियों और भारतीय संस्कृति के पतन को रोकने हेतु वैदिक सनातन धर्म आर्य समाज को फैलाने का बीड़ा उठाया। उनका कहना था कि शिक्षक चरित्रवान और आदरृा होना चाहिए। हमारे यहाँ शिक्षक है, प्रोफेसर है, प्रधानाचार्य है, उस्ताद है, मौलवी है, पादरी है परन्तु आचार्य नहीं है अत आचार्य आचरणवादी व्यक्ति होता है।[2] आचार्य ही समाज में शिक्षा की नींव है। 1892 में डी.ए.वी. कालेज में वैदिक शिक्षा को मुख्य पाठ्यक्रम बनाने में विवाद उत्पन्न हुआ तो आर्य समाज की दो शाखाएँ बनीं जिसमें स्वामी जी ने पंजाब में आर्य समाज को फैलाना चाहा। तथा गुरुकुल पद्धति अनिवार्य बताई। 1897 में लाला लेखराम की हत्या हो गई। तब श्रद्धानन्द जी ने 1917 में पंजाब और हरियाणा में हिन्दुओं के शुद्धीकरण हेतु भारतीय हिन्दु शुद्धी-सभा का आयोजन किया। तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व किया। इन्होने एक मासिक पत्रिका आर्य-मुसाफिर की शुरुआत की जिसमें उत्तरी भारत से संबन्धित हिन्दु सामाजिक सुधार और धार्मिक सुधार के लेख छपते थे जिसके माध्यम से इन्होने हिन्दुत्व पुनर्जागरण की अलख भारतीयों में जगाई।[3] स्वामी जी ने अपने गुरु दयानन्द जी के मार्ग पर चलने का प्रण लिया। वे लिखते हैं ऋषिवर सरस्वति जी आप मेरे आदर्श हैं। महर्षि दयानन्द के महाप्रयाण के बाद उन्होनें स्व-संस्कृति, स्व भाषा, स्व-शिक्षा, नारी-कल्याण, दलितों का उत्थान, वेदों का उत्थान, धार्मिक पाखंडों का खंडन, अंधविस्वास उन्मूलन इत्यादि राष्ट्रीय हिताय काम किया।

डॉ अम्बेदकर ने सन 1922 में स्वामी श्रद्धानन्द को अछूतों का सबसे बड़ा हितेषी और ईमानदार व्यक्ति कहकर संबोधित किया।[4]

20वीं शताब्दी में मथुरा-आगरा क्षेत्र में मलकाना राजपूतों को जबरन इस्लाम धर्म कुबूल करवाया गया। स्वामी श्रृद्धानन्द जी ने आर्य समाज के माध्यम से घर-घर तथा जन जन पहुँचकर मलकाना राजपूतों का शुद्धी सभा द्वारा गायत्री का उच्चारण कर उन्हें पुन हिन्दु बनाया। इस प्रकार स्वामी जी ने वैदिक धर्म और आर्य समाजी सिद्धान्तों का पालन करते हुए हिन्दुओं का मनोबल बढ़ाया। स्वामी जी आर्य समाज के एक महान विभूति थे। वे हिन्दुत्व के पूरोधा और निडर देशभक्त थे।[5]

निष्कर्ष

समाज सुधारक के रुप में स्वामी जी के जीवन का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होनें प्रबल विरोध के बावजूद भी स्त्री के सशक्तिकरण हेतु शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है। स्त्री शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण और सामाजिक जागरण संभव है। पुत्री अमृता कला के इसाई मिशनरी स्कूलों में इस्सा इस्सा बोल तेरा क्या लगेगा मोल गीत को सुनकर स्वमी जी चिन्तित हो उठे और गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय को स्त्री-मुक्त शिक्षा हेतु खोल दिया गया।

REFERENCES

1. Kapoor K.N. , Swami Shardhanand : Arya pratinidhi Sabha, Jhalandhar 1978

2. Jordens, J.T.F, Sawami Shardhanand : His Life and Causes, Oxford Press, 1981

3. पत्रिका, अनमोल प्रकाशन, स्वामी श्रृद्धानन्द भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संघर्ष, 1996

4. डा. अंबेडकर, राईटिंग एण्ड स्पीच, वोल्यूम-9, पृष्ठ 23-24 1991

5. Chopra R.M. An Article on Swami Shardhanand : The Legacy of Punjab, 1997.